

HISTORY

Lecture No - 26

सिद्ध सभ्यता

००
(संश्लेषण)

BV

Dr. Komal

SNSRKS, college, SAHARSA

History

Q. सिंधु घाटी के लोगों की धार्मिक दृष्टा के बारे में अध्ययन प्रस्तुत करें।

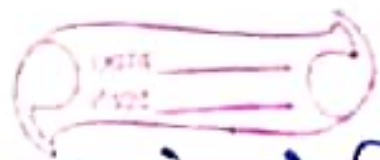
उत्तर → भारतीय भूमि पर धर्म एवं धार्मिक भावनाओं की सर्वप्रथम विनूगारी, सैन्धु सभ्यता के काल में विकीर्ण हुई, तथापि वहाँ के निवासियों की धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध इतिहास के पास समुचित जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसके सर्वप्रमुख कारण यह हैं कि यहाँ की लिपि अभी तक अपाठ्य है। सम्भवतः अपने समकालीन सभ्यताओं के लोगों की भाँति सैन्धव प्रदेश के लोग भी बहुदेववादी, पृथ्वी पूजक अथवा शक्ति के आसक्त थे। विभिन्न शिल्पों से प्राप्त जानकारी के आधार पर हम सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के धार्मिक विश्वासों का अध्ययन

निम्नरूपेण कर सकते हैं।

मातृदेवी की प्रधानता :- सिन्धु घाटी का समाज मातृसन्तान्तरक था। अतः समाज में मातृदेवी की पूजा बड़े ही ब्रह्मा-भाव से की जाती थी। ये लोग पृथ्वी और प्रकृति को मातृदेवी मान कर लोग पूजा किया करते थे। मातृदेवी को प्रसन्न करने के लिए पशु बलि भी देते थे। मोहनजोदड़ो की खदानों में प्राप्त शकु देवी की मूर्ति के सिर के ऊपर शकु पक्षी अपना परख फैलाकर इस तरह बैठा है जैसे कि वह मातृ देवी की रक्षा कर रहा हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि सिन्धु घाटी सभ्यता में विभिन्न क्षेत्रों में निम्न-मिन्न रूपों में मातृदेवी की पूजा पाचातिर्य

प्रकृति देवी की पूजा :- प्राचीन विश्व सभ्यता के लोग प्रकृति पर उन सम





वस्तुओं की आराधना करते थे जिन्हें
 उन्हें किसी-किसी रूप में लाम
 पहुँचाना हो। वे वृक्ष, पशु, पक्षी, सूर्य,
 चन्द्र, पृथ्वी आदि प्राकृतिक शक्तियों
 की उपासना किया करते थे। वे
 जल, वायु, अग्नि, चन्द्र आदि की पूजा
 किया करते थे। वृक्ष-पूजा की गति
 सिंधु सभ्यता में पशु-पूजा का भी
 प्रचलन था। यहाँ के लोग विभिन्न
 पशुओं में देवी-देवताओं का वास
 मान कर उनकी पूजा अर्चना किया करते
 थे। यहाँ के लोग सनक रूप राक्षसी
 के भी उपासक थे।

शिव की पूजा :- सिंधु घाटी की
 खुदाइयों में पाये गये तीन मुख वाले
 धूर्तियों के आधार पर ज्ञान होता है
 कि तत्कालीन समाज में शिव की पूजा
 का प्रचलन था। शिव का पशुपति



मी पूछा जाता है, अतः शिवपूजा का सुक्ल पशुओं की पूजा से भी जोड़ा जाता है। शिव की पूजा की शुरुआत सिंधु सभ्यता की ही है।

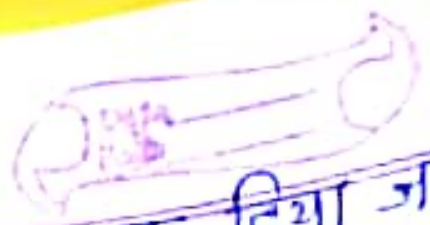
लिंग और योनि की पूजा :- प्रायः आज के युग में शिव की मूर्ति की पूजा न कर लोग उनके लिंग एवं योनि की ही पूजा करते हैं। लिंग एवं योनि की पूजा का प्रचलन भी सिंधु क्षेत्र में ही शुरू हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लिंग की मूर्ति योनि पूजा में भी विश्वास रखते हैं। सूत्र-प्रेत से छुटकारा पाने के लिए भी लोग योनि की पूजा करते थे।

धार्मिक अन्धविश्वास :- सिंधु घाटी के लोग कई अन्धविश्वास के भी शिकार हो चुके थे। लोगों को सूत्र-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना आदि में गहरी आस्था थी और इससे बचने के लिए वे नावीग



एवं जन्म आदि का प्रयोग भी अश्वेत
 सुद्राह्यो से प्राप्त सार्वजनिक स्नानागार
 द्वाारा एवं स्वास्तिका के चिन्ह को
 भी उनसे अवसरों पर स्नानकुंड में ही
 धार्मिक महत्त्व का प्रतीक समझा जाता है।
 यहाँ के लोग यज्ञ, कर्मकाण्ड एवं पुनर्जन्म
 के सिद्धान्तों में विश्वास रखते हैं।

• मृतक संस्कार :- सैन्धव धाती में मृतक
 संस्कार के निगम सर्वत्र एक जैसे नहीं थे।
 सम्भवतः वहाँ मनुष्य के अंतिम संस्कार
 के संबंध में तीन प्रकारों प्रचलित थी।
 प्रथम संस्कार के अंतर्गत मनुष्य की
 लाश को कुत्र में दफना दिया जाता था।
 दूसरी प्रथा के अनुरूप पहले से लाश
 को पशु-पक्षियों के खाने के लिए छोड़
 दिया जाता था और तत्पश्चात् उसके आस्थि
 पंजर को दफना दिया जाता था। और
 प्राप्त आस्थि एवं मस्म को कुलश में



बन्द पुर उसे जल पवाह कुर दिया जाना था
 इस तरह यहाँ के लोग जीववाद एवं आत्मा
 के अमरत्व के सिद्धांत का स्वीकार करते थे

निरुद्ध :-

सिंधु घाटी की सभ्यता के
 निवासियों के धर्म एवं उनकी धार्मिक
 विश्वासों के उपर्युक्त विवरण से यह
 स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक हिन्दू
 धर्म की कल्पित विशेषताएँ तत्कालीन
 धर्म धर्म के बीज रूप में विद्यमान थी
 सिंधु घाटी का धर्म इन्हीं विशेषता
 के साथ भारतीय धर्म कि आधुनिक
 प्रचलित हिन्दू धर्म से उसका विभेद
 बुझना से किया जा सकता है। वास्तव
 में सैन्धव सभ्यता के लोगों का धार्मिक
 जीवन बहुदेववाद, ब्राह्मडाम्बर एवं पुनर्जन्म
 के सिद्धांतों से पूर्णतः प्रभावित परिलक्षित
 होता है और इसका स्पष्ट प्रभाव
 आधुनिक भारतीय धर्म धर्म पर देखा जा
 सकता है।